हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Dèekhush

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _

ई-मेल पता (E-mail address): _

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 4 17.07.2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	9	0	3	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature) Dèekhush.

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) चकवी बिछुटी रैणि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सूं, ते दिन मिले न राति।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के महानतम् कवि 'तुलसीदास' द्वारा रचित ग्रंथ से उद्धत है। इन पंक्तियों में कवि भगवान राम की भक्ति के बिना मनुष्य की होने वाली दशा की ओर प्रकाश डालता है।

व्याख्या - ऊपर लिखित पंक्तियों में बताया गया है कि जैसे चकवी नामक पक्षी अपने संगी से बिछुड़ जाता है और उसे कोई आशा नजर नहीं आती है, वैसे ही राम से बिछुड़ जाने पर व्यक्ति को अंधकार के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता।

विशेष -
① प्रस्तुत पंक्तियों में दो पक्षों की तुलना की गई है।
② भाषा ब्रज व अवधी का मिश्रण है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन विधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ- ये पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के महान कवि 'सूरदास' द्वारा रचित भ्रमरगीतसार से ली गई है, जिनमें सूरदास प्रभु के दर्शन के बिना सब प्रयासों को विफल बताते हैं।

व्याख्या- इन पंक्तियों में सूरदास बताते हैं कि वीणा को हाथ से दूर करके रखना, हिरण वाला रथ उन्होंने नहीं चलाया, और चंद्रमा भी अभी तक ढला है।

जिस पर कठिनाई आती है वह उसकी संवेदना को समझ सकता है उसी प्रकार अभिमत प्रेम को पार करना या समझना जटिल है। गोपियों की विरह दशा तब और गंभीर हो जाती है जब से कमल रूपी नयन वाले, कृष्ण वहाँ से चले गये हैं, आँखों से नीर लगातार बह रहे हैं एवं इस सुलगती हुई आग में धीरज किस तरीके से रखा जाए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और अन्त में गोपियाँ कहती हैं कि हे प्रभु आपके दर्शन के बिना सारे प्रयास व्यर्थ ही हैं, और कोई भी प्रयास या विरह वेदना आपके दर्शन तक नहीं पहुँचा पा रहा है।

विशेष -
1. विप्रलंभ-श्रृंगार का सघन वर्णन किया गया है।
2. भाषा - ब्रज भाषा का ~~गीतात्म~~ लयात्मक प्रयोग किया गया है।
3. स्वयं-वेदना पर महत्व दिया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - ये पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के महाप्राण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'राम की शक्ति पूजा' नामक कविता से ली गई हैं। इनमें राम - रावण के समर में शक्ति के बिना राम की दशा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या - 'राम की शक्ति पूजा' कविता की शुरुआत 'रवि हुआ अस्त' से हुई और उसके बाद शक्ति के अभाव में राम को विजय पाने के लिए कोई दिशा नहीं दिखाई दे रही और हवा भी स्तब्ध हो गई है।

आकाश लगातार गरज रहा है, धरती ध्यान में लीन है केवल एक जलती मशाल रह गई है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि 'सीता-हरण' के पश्चात् राम की मनोदशा का वर्णन किया है। कहीं-कहीं भट खुद 'निराला' के आत्म-संघर्ष को भी व्यक्त करता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल; helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जलती ~~शिखा~~ मशाल उस मन की ओर इंगित करती है जो अभी तक थका नहीं है - 'वह एक और मन रहा राम का जो अभी न थका'। अतः आशावादी दृष्टिकोण को बताती है।

विशेष -

① तत्सम-प्रधान भाषा और मुक्त छंद की झलक दिखाई देती है।

② 'सरोज-स्मृति' में निराला टूटे हुए दिखाई देते हैं लेकिन यहाँ आशावादी दृष्टिकोण है।

③ 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' का भी संदेश झलकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियां सच्चिदानंद 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'असाध्यवीणा' नामक कविता से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में जब राजा के महल में वीणा को बजाने वाले एकमात्र व्यक्ति 'प्रियवंद' से उस गूढ़ वस्तु के बारे में पूछा गया तो उसके जवाब का वर्णन है।

व्याख्या - प्रियवंद बताते हैं कि वीणा को बजाने में उनका कोई योगदान नहीं है उन्होंने तो केवल वीणा के समक्ष अपने आप को समर्पित कर दिया था। जो स्वर वीणा के माध्यम से सुना वह तो उस 'स्वर - नभ' से आया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसका स्रोत वह सब-कुछ (ईश्वर) है। इस सबकुछ की विशेषताएँ हैं ~~मण~~ मौन, अविरल, अचल, अविभाज्य आदि है।
वे ईश्वर शब्दहीन हो है लेकिन उन्हीं का स्वर सब में समा हुआ है।
अर्थात जो स्वर वीणा से सुनाई दी वो स्वयं को सब-कुछ को समर्पित करने से ही गूँजी थी।

<u>विशेष</u>:-

1. ~~स्वय~~ समर्पण भाव को दिखाया गया है।
2. 'अज्ञेय' ने भौतिकवाद में विश्वास करते हुए भी अपने आप को सबकुछ में समर्पित किया है।
3. प्रियवंद ने वीणा की आवाज को उसके स्रोत से उद्भूत बताया है।
4. भाषा तत्सम-प्रधान खड़ी बोली है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मलिक मुहम्मद 'जायसी' द्वारा रचित 'पद्मावत' महाकाव्य से ली गई हैं जिनमें कवि ने 'बारहमासा' वर्णन के द्वारा नागमती के वियोग को दर्शाया है।

व्याख्या - जब राजा रत्नसेन, हीरामन तोते के शब्द सुनकर, रानी पद्मिनी को पाने चले जाते हैं तो नागमती विरह दशा में लगभग पागल-सी हो जाती है।

भाद्रपद महीने में विरह की दशा और गंभीर हो गई, सोने में ही कठिनाई ऊपर से अकेलेपन में आँखे खोलते हुए ही हृदय फटता है। बिजली चमक रही और बादल गरज रहे हैं, इस स्थिति में जो विरह-काल में रहता उसकी तो स्थिति और भयानक हो जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

भावी बारिश हो रही है और विरह-व्यथा अत्यंत दुःखद व गंभीर होती जा रही है।

विशेष -

① पंक्तियों में विप्रलंभ- शृंगार का वर्णन किया गया है।

② दृश्य व श्रृव्य बिंबों का प्रयोग।

③ भाषा ब्रज मिश्रित खड़ी बोली है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति-पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये। 20

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' की शुरुआत भयंकर प्रलय के बाद मानव के विकास ~~की रूप~~ - परंपरा से होती है।

इसमें मनु की प्रारंभिक स्थिति का वर्णन - "हिमाद्रि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाँव,
एक मनुज देख रहा था, सृष्टि का प्रलय प्रवाह।" से होती है।

इसमें ~~[illegible]~~ आगे ललित-कला की खोज में गंधर्व देश की कन्या 'श्रद्धा' आती है जो मनु के साथ मिलकर सृष्टि की रचना आरंभ करते हैं।
श्रद्धा, भावनात्मक, अहिंसा और त्याग के रूप में मानवता का विकास करती है। जब मनु पशु-हिंसा की ओर अग्रसर होता है तो श्रद्धा उसे रोकती है।

कामायनी में मानव-मन में काम, इच्छा, और क्रिया की विषमता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को दिखाया गया है कि कैसे एक तत्व कि के हल्के या भारी हो जाने से मानवता के विकास का रास्ता पलट जाता है।

'इड़ा' जो कि भौतिकवादी व भौतिक-विकास में विश्वास रखती है. मनु के मोहग्रस्त हो जाने पर उसे निकाल देती है। क्योंकि 'इड़ा' का झुकाव एक-दिशा में ही है इसे भावनात्मक लगाव गलत लगता है।

मनु और श्रद्धा का पुत्र 'मानव' को तार्किकता सीखाना भी मानवता के विकास की विषमता को दूर करने के उद्देश्य से है।

अतः डॉ नगेन्द्र की व्याख्या के अनुसार मानव मन (मनु) के दो भाग 'श्रद्धा' (भावनात्मक) व 'इड़ा' (भौतिकता) के की समान मात्रा की ओर झुकाव उसके विकास को दर्शाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न थी, इच्छा क्यों पूरी हो मन की, ...

और जब कामायनी के रहस्य सर्ग व आनन्द सर्ग में समरसता की स्थिति आती है तो मानव-मन व मानवता के विकास की पहली सीढ़ी शुरू होती है।

"समरस थे जड़ या चेतन, सुंदर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती, आनन्द अखण्ड घना था॥"

'श्रद्धा' मानवता के विकास के लिए महत्वपूर्ण संदेश मनु को देती है-

"औरों को हँसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ॥"

अतः कामायनी में जयशंकर प्रसाद ने मानव-मन की मनोमय कोश से विज्ञानमय तथा आनन्दमय लेकर व शाम्भ व शाण्भव स्थिति से लेकर शांभव स्थिति में आने ~~के~~ को ~~विकास~~

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को ही 'आनन्द' की प्राप्ति बताया है जो सुखाकांक्षी होने से भी अधिक महत्व की वस्तु स्थिति है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"राम की शक्तिपूजा' की संवेदना के बारे में निश्चित मत पाना बड़ा कठिन निर्णय है लेकिन इसका एक दृष्टिकोण 'शक्तिकाव्य का प्रतिमान' होना भी बताया गया है।

'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' इसकी केंद्रीय संवेदनाओं में से एक है जिसमें मानवरूपी राम के हारे हुए मन को पुन: आशावादी बना दिया है।

राम सीता को छुड़ा पाने में असमर्थ दिखाई देते हैं और आत्मधिक्कार के भाव से ग्रसित - 'धिक् जीवन जो पाता ही विरोध × ×× जानकी हाय! प्रिया का उद्धार हो न सका।"

जबकी रावण अनैतिक व अन्याय का समर्थक है लेकिन शक्ति भी राम का साथ नहीं दे रही 'अन्याय जिधर है, उधर है शक्ति'।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस राम-रावण के अपराजेय समर में शक्ति का महत्व बहुत बढ़ जाता है क्योंकि राम को केवल अंधकार और निराशा के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता।

लेकिन उसी वक्त ~~के~~ ~~एक~~ एक विचार ~~से~~ ~~कि~~ "शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन" से ~~शक्ति~~ राम से प्रसन्न हो जाती है और युद्ध भूमि में साथ देती है।

इसी आशावादी दृष्टिकोण को पाकर राम ने अपने आप को ऊर्जित महसूस किया और आत्मविश्वास से परिपूर्ण पाया 'वह एक और मन रहा राम का जो अभी न थका।'

~~अतः~~ ~~अवस्थाओं~~, ~~के~~ ~~में~~ ~~म~~

इसमें राम की कथा के साथ ही कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का ~~क~~ आत्मसंघर्ष व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सीता की मुक्ति' के माध्यम से नारी की मुक्ति आदि भी झलकते हैं लेकिन इन सबका समाधान 'शक्ति की मौलिक कल्पना और प्रयत्न' में ही निहितार्थ है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-भारती' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की भविष्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'भारत-भारती' नवजागरण की चेतना से युक्त काव्य है जिसमें कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारत के महान व गौरवपूर्ण इतिहास से लेकर वर्तमान की दुर्दशा के कारण व भविष्य के लिए समाधान भी प्रस्तुत किए हैं।

"हम क्या थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,
आओ मिलकर आज ये विचार करें सभी॥"

हालाँकि इतिहास गौरवपूर्ण रहा है लेकिन उसके पीछे पतन होने के दो कारण गुप्त जी ने आंतरिक व बाह्य कारणों में विभक्त किए हैं।

आंतरिक कारणों में भ्रष्टाचार, आलसीपन, व स्वार्थीपन आदि को जिम्मेदार ठहराया तो इस्लामी आक्रमण और ब्रिटिश राज में परतंत्रता को बाह्य कारणों में जिम्मेदार बताया है।

ये कारण 'भारतेन्दु' द्वारा रचित 'भारत दुर्दशा' से मिलते जुलते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भविष्य-दृष्टि में गुप्त सभी क्षेत्रों से देश के विकास हेतु आह्वान करते हैं जिसमें पश्चिम के तकनीकी को व्यक्ति विकास की भारतीय परंपरा की नीति के साथ समन्वय करने को कहा है।

इन्होंने पश्चिमी यंत्रों का उपयोग मानव के विकास के लिए करने को कहा है।

व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के लिए सभी को भ्रष्टाचार रूपी परंपरा से बाहर आकर समानता के विकास की ओर अग्रसर होने को कहा है।

साहित्यिक कवियों से भी मनोरंजन की जगह समाधान के लिए उपदेश देने को भी कहा है।

'केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
इसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।"

अतः सभी क्षेत्रों में समन्वय की स्थिति व स्वदेशी उत्पादन पर जोर दिया ताकि लोगों को रोजगार मिल सके।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आयात आधारित व्यवस्था को बदलकर निर्यात व स्व-संपन्न अर्थव्यवस्था की ओर चलने को कहा है।

इसमें कुछ सीमाएँ भी दिखती हैं। जैसे भिन्न वर्गों, किसानों की समस्याओं, व जातिगत विषमता को लेकर समाधान दुर्लभ दिखाई पड़ते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'स्कंदगुप्त' नाटक से ली है जिसमें नाटक के अंत में ~~[illegible]~~, स्कंदगुप्त देवसेना के साथ अकेले में जीवन बिताना चाहता है लेकिन देवसेना उस आदेश को स्वीकार नहीं करती।

व्याख्या- इन पंक्तियों में ~~[illegible]~~ स्कंदगुप्त युद्ध से हार थककर शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहता है उसके लिए देवसेना को प्रस्ताव भी दिया लेकिन देवसेना अपने राज्य के आदर्श को बचाने के लिए इन प्रस्ताव को खारिज करती है और मानव-सेवा ही अपना अंतिम लक्ष्य समझती है।

देवसेना हृदय की कसौटी कठिनाईयो से पहचानती है। सभी छोटे-छोटे सुखों को नगण्य मानकर उस सुख को भोगना ही नहीं चाहती।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

वह ऐसे सुख में विश्वास रखती है जिसका अंत न हो, और सार्वकालिक और सार्वभौमिक हो। और अंत में दुष्यन्त से क्षमा चाहती है व मानव व राज्य सेवा में पुनः अपने आप को समर्पित कर देना चाहती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

संदर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मन्नू भंडारी' द्वारा लिखित 'महाभोज' उपन्यास से ली गई हैं। इन पंक्तियों में दा साहब, अपनी पार्टी से खड़े हुए उम्मीदवार को हिदायत देते हुए नजर आते हैं।

व्याख्या - सरोहा गाँव के चुनाव में जब सुकुल बाबू की पार्टी का दबदबा बढ़ता जा रहा था तो दा साहब अपने पार्टी के ~~उम्मीद~~ उम्मीदवार को आत्मविश्वास दे रहे थे कि राजनीति में आगे बढ़ने के लिए चारों ओर देखना पड़ता है कि अवसर व नुकसान कहाँ-कहाँ मौजूद है।

किस समय अवसर आ जाये कि वातावरण अनुकूल बन जाये और किस समय विपरीत। इन सभी चीजों में समन्वय बनाये रखने के लिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जागरूकता जरूरी है।
जैसे डा. साहब ने हीरा को गाड़ी में बैठाकर गाँव वालों का दिल जीत लिया, जोरावर की गिरफ्तारी के दबाव में वोट माँग लिये और दत्ता बाबू को कम मूल्य पर कागज उपलब्ध करवाकर संपूर्ण वातावरण को ही बदल दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'एक दुनिया समानान्तर' कहानी संग्रह में लिखित कहानी से ली गई हैं जिसमें लेखक ने आधुनिक यांत्रिकता से भरे जीवन व भावनात्मक लगाव के कम होने को दर्शाया है।

व्याख्या - जब दिल्ली शहर में अपने आप को अकेलापन महसूस करने पर, तलाश में निकले व्यक्ति ने शहरी यांत्रिकता व संबंधों के खोखलेपन को उजागर किया है। माँ के ममत्व वाली बात उसे नहीं दिखाई दी और केवल दिखावेपन ही पाला।

भावनात्मक - संबंधों की जगह केवल एक घमण्ड, दिखावा और अपने आप में लदी हुई थकान को महसूस किया। अतः मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को सटीक व यथार्थ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को पांडित्य के रूप में देखा न कि (एक सुखी जीवन के रूप में)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

~~सन्दर्भ~~ संदर्भ-

प्रस्तुत पद्यावतरण प्रेमचंद द्वारा लिखित 'बूढ़ी-काकी' से ली गई है। जिसमें कोठरी में बैठी बूढ़ी-काकी की वृद्धावस्था के कारण परिवार से अलगाव को बताया है।

व्याख्या:-

~~जब~~ जब सगाई समारोह में बूढ़ी-काकी अपने जीभ की इच्छा पर नियंत्रण न कर पाई व सुगन्धित पकवानों की खुशबू कोठरी में पहुँची तो बाहर टेन्ट के खुले कोने से देखने लगी। उसकी वजह उसके भतीजे ने देख लिया तो उसे वापस कोठरी में लाकर पटक दिया और कार्यक्रम ~~के~~ के संपूर्ण न होने तक बाहर न निकलने की हिदायत दी।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस स्थिति में बूढ़ी माँ रोती हुई व लगातार बहती हुई आँखों से उसके बेटे की चिता होने की इच्छा रखती है।

अतः वृद्धावस्था को समाज में नफे-नुकसान से तोला जाना एक संवेदनहीन समाज का लक्षण बताता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'मैला आँचल' का नायक आप किसे मानते हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

'मैला आँचल' फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा रचित उपन्यास है जो कि स्वतंत्रताप्राप्ति से पूर्व 1954 ई. में लिखा गया। इसमें मेरीगंज गाँव की कथा का वर्णन किया गया है, वहाँ के सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक स्थिति का मनमोहक वर्णन किया है। हालाँकि पात्रों की अधिकता व सबके अपने-अपने किरदारों को उचित रूप से निभाने के कारण नायक का चयन कर पाना कठिन है जैसे लक्ष्मी, सेवादास, विश्वनाथ व डॉ. प्रशांत आदि।

लेकिन यदि चयन करना हो तो मैं डॉ. प्रशांत को इस उपन्यास का नायक मानूँगा। क्योंकि डॉ. प्रशांत ने अपनी उच्च शिक्षा व मंत्रियों द्वारा उच्च पद दिलाये जाने की सिफारिश को नकारते हुए एक पिछड़े गाँव में जाकर सेवा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दृष्टि The Vision

लोगों का निर्माण किया जहाँ मूलभूत सुविधाएँ भी नहीं थी।

'जोतषी बाबा' के द्वारा फैलाया जाने वाले अंधविश्वासों का विरोध व महिला-दृष्टिकोण को नगण्य मानने वाले "महिला को दवा-दारू की जरूरत नहीं होती" लोगों के बीच कार्य करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

डॉ. प्रशांत ने न केवल लोगों के विचारों में सोचने की क्षमता पैदा की बल्कि संपूर्ण वातावरण में एक नया आयाम जोड़ दिया। जहाँ लोग शिक्षा के बारे में कुछ जानते ही न थे, नारी को ताज्य समझते थे वहाँ पर लोगों की सेवा करने का साहस केवल डॉ. प्रशांत ही जुटा सके।

इसके अलावा मठ में लड़की के ऊपर हो रहे दैहिक-शोषण को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

काम करने के लिए भी उन्होंने जागृति पैदा की और भ्रष्टाचारी व भोग-लिप्सा में रत सेवादास व नागा बाबा के खिलाफ भी लोगों को विचार दिलो

इस उपन्यास में डॉ. प्रशान्त ने स्वतंत्रता व राजनीतिक विचारों के माध्यम से लोगों को जागृत किया और गान्धीजी व जवाहिरलाल जैसे महापुरुषों के बारे में लोगों की धारणा और प्रबल की।

गाँव में मलेरिया केन्द्र खोलना व उसे मिटाने को लेकर संकल्प करना एक महत्वपूर्ण बात थी।

हालाँकि इतने बड़े उपन्यास में कुछ कह पाना निश्चित नहीं लेकिन डॉ. प्रशान्त एक ईमानदार, कर्मठ व सेवा भाव रखने वाले व्यक्तित्व को ही नायक मानना उचित है और उनसे अन्त तक सीखने के स्रोत का दर्जा दे सकते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल मानववादी विचारधारा के ~~प्रवि~~ हैं जो सामाजिक उत्थान व समरसता के दृष्टिकोण से साहित्यलेखन करते हैं।

'दिव्या' एक चरित्रप्रधान उपन्यास है जिसमें 'दिव्या' की ~~उसकी~~ जीवनकथा, बौद्ध प्रसंगों से आगे बढ़ती है। ~~फिर~~ इसमें ~~सामा~~ सामाजिक समस्यायें एक-आयामी न होकर बहु-आयामी रूप में दिखती है। जैसे-नारी-व्यवस्था, दास-व्यवस्था, वर्णाश्रम-व्यवस्था, आदि का वर्णन किया है साथ ही परलोकवाद ~~का~~ खण्डन व इहलोकवाद का प्रतिपादन।

~~पृ~~ पृथुसेन के द्वारा अपनी शौर्यता व वीरता का परिचय देने के बावजूद उसको उचित दर्जा न देना-

'अपने कर्मों के फल को प्राप्त करने के लिए, क्या मैं अपना जन्म बदलूं।'

अतः जातिगत व वर्णाश्रम धर्म ~~के~~ ~~व्यवस्था~~ ~~धर्म~~ के दुष्परिणामों को दिखाया गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

"A3"

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दैहिक व्यापार करने वाले 'बबूल' को संरक्षण व दास व्यवस्था पर चोट की है। किया जब दासी (धारा) भी तो अपने पुत्र 'शाबुल' को दूध पिलाने तक मिलता - "उसके लिए वह अपने दूध की चोरी करती।"

पराची नारी को अपनाना समाज में आज तक भी हेय की भावना से देखा जाता है।

धार्मिक विडंबनाओं का वर्णन किया है बौद्ध भिक्षुक 'चीवुर' ने धर्म में नारी को त्याज्य माना है।

राज्य प्राप्त होने के बाद राजाओं में प्रजा के प्रति किस प्रकार सेवा भाव खत्म हो जाता है और किस प्रकार जिम्मेदारियों से भागते हैं।

'मारिश' के माध्यम से चार्वाक अथवा लोकायत दर्शन की विचारधारा का प्रतिपादन करना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"जिस जगत व शरीर का अनुभव करते हैं उसमें विश्वास न करना, और जिस परमात्मा व जीवात्मा जिसका कभी अनुभव न किया हो उसे सत्य मानना। देवी! यही जीवन सत्य है, जो पाना है यहीं पाओं।"

अतः इन सभी प्रश्नों पर बल देने के कारण 'दिव्या' उपन्यास ने अपनी छाप छोड़ी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' मन्नू भंडारी द्वारा लिखित उपन्यास है जिसकी रचना ~~1979~~ 1979ई० में हुई। यह एक राजनीतिक उपन्यास है। इसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् की व्याप्त राजनीतिक विकृतियों को दिखाया गया है कि लोकतंत्र एक एक तरह से मौत हो गयी है।

बिसेसर की मौत ... नौ हरिजनों की मौत होना, उच्च-जातियों द्वारा निम्न-जातियों पर अत्याचार करना, 'बिन्दू' द्वारा उनका अधिकार व न्याय माँगने पर जोरावर जैसे राजनितिक लालची लोगों द्वारा उसकी हत्या करवाना। आदि सभी राजनीतिक व सामाजिक विकृतियों के लक्षण है।

मीडिया का थोड़े से प्रलोभन में आकर बिकना व विरोध की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आवाज को दबाना, लोकतंत्र की एक पहचान की हानि है।

'दिंदा' न्याय तक पहुँचने की कोशिश करता है लेकिन सत्ता प्राप्त लोगों की चाल द्वारा उसे भी जेल करवाना व प्रताड़ित करना इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि आखिर लोकतंत्र में न्याय है या नहीं।

यहाँ तक कि आईपीएस मि. सक्सेना का निलंबित होना, न्याय व पुलिस व्यवस्था पर चोट करती है। स्वयं मुख्यमंत्री द्वारा जोरावर जैसे डकैतों को संरक्षण देना एक आम बात बन गयी है।

दलगत राजनीति व भ्रष्टाचारीता वर्तमान समय में और अधिक हो गयी है तथा लोकतंत्र के नाम पर दिखावा तो आलबात है।

ऊँचे कद के नेता सूरज बाबू भी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चुनावों के लिए एक-आध व्यक्तियों की मौत तो आम बात समझते हैं।

अतः इन सभी समस्याओं को उजागर करने के लिए 'मयलोज' एक महिला उपन्यासकार द्वारा लिखा जाना महत्वपूर्ण बात है क्योंकि उस "दुर्निवार सम्मोहन से भरी खतरनाक लपकती अग्निलीक के लिए जो बिहू से लेकर बिंदा व अंत में मि. सक्सेना के कुलीन स्वभाव को व्यक्तित्वांतरण के रूप में दिखाती हैं," शायद कोई कुछ ही लेखक इतना साहस जुटा पाते।

वर्तमान समय में तो इसकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गयी हैं क्योंकि सभी समस्याओं ने गंभीर रूप धारण कर लिया है और लोकतंत्र पतन की ओर अग्रसर है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'दिव्या' उपन्यास के माध्यम से यशपाल ने हिंदी उपन्यास में उपस्थित नारी-संबंधी चिन्तन में गहन हस्तक्षेप किया है। इस कथन के संदर्भ में 'दिव्या' उपन्यास के कथ्य पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।"- दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हुए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"दिव्या इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पना मात्र है।" यह बात यशपाल ने दिव्या के प्राक्कथन में ही लिख दी ताकि लोग संदेह न करे कि यह ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर खरा उतरे।

यशपाल द्वारा रचित इस उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्यों के तौर पर 'सागल व मथुरा' बौद्धयुगीन नगर है व व्यक्तियों के तौर पर मिलिन्द, पुष्पसेन व पतंजलि का नाम आया है लेकिन इन सभी तथ्यों की उपस्थिति केवल प्रतीकों के तौर पर ही है ना कि मुख्य पात्रों के रूप में।

यशपाल ने इतिहास में कल्पना के रंग नहीं भरे, काल्पनिक विचार को इतिहास के रंगों से भरा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस कला का प्रयोग केवल ऐतिहासिक वातावरण पैदा करने के लिए किया गया है, यह दिखाने के लिए कि जो सामाजिक समस्यायें वर्तमान में विद्यमान है अतीत भी उससे अछूता न था।

धर्मों का नारी के प्रति दृष्टिकोण दिखाने के लिए बौद्धयुगीन वातावरण पैदा किया और उसके अनुरूप तत्सम-प्रधान शब्दावली।

इस वातावरण में उपन्यास के मुख्य पात्र 'दिव्या' की जीवन कथा को आगे बढ़ाने का काम न कि पाठक को ऐतिहासिक तथ्यों पर विश्वास करने को।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः इस दृष्टि से देखा जाए तो 'यशपाल' ज्यादातर सफल ही हैं क्योंकि प्रस्तावना में ही स्पष्ट कर दिया है।

कुछ स्थानों पर 'सांप्रदायिक मारिशा' के माध्यम से यशपाल अपनी विचारधारा को थोपते हुए नजर आते हैं लेकिन वह भी उस वातावरण के व चरित्रों के अनुपात में ही था, थोपा हुआ नहीं लगता।

स्पष्ट है कि 'दिव्या इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पना मात्र है, पंक्ति का उद्देश्य सामाजिक समस्याओं की निरंतरता व उनके समाधान को उजागर करना है न कि इतिहास पढ़ना।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) ''महाभोज' में चित्रित यथार्थ आदर्शोन्मुख यथार्थ है।' इस मत के संदर्भ में 'महाभोज' उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

"दुर्निवार सम्मोहन से भरी उस खूंखार लपकती अग्निलीक के लिए जो बिसू से लेकर बिंदा व मि. सक्सेना के व्यक्तित्वांतरण तक पहुँचती है" को समर्पित उपन्यास में मि. सक्सेना के व्यक्तित्वांतरण को आदर्शोन्मुख यथार्थ बताया गया है।

'महाभोज' उपन्यास में मि. सक्सेना की पृष्ठभूमि देखें तो उसमें कर्त्तव्यनिष्ठा की नैतिकता पहले से ही थी। 'दिनेश' को गोली खाते हुआ छोड़ने की आत्मग्लानि उसे पहले से खायी जा रही थी, लेकिन अबकी बार यह निर्णय उसका स्वतंत्र निर्णय था न कि थोपा हुआ या दबाव में लिया गया निर्णय।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अत: यथार्थ ~~सुलभ~~ न सुलभ न होकर दुर्लभ तो है ही, क्योंकि एक लम्बे समय के पश्चात् व्यक्तित्व में परिवर्तन होना एक संभव बात है, असंभव तो नहीं।

स्पष्ट है कि 'महाभोज' उपन्यास में चित्रित यथार्थ 'आदर्शोन्मुख यथार्थ' न होकर दुर्लभ यथार्थ है जो कि लम्बे समय के बाद संभव तो है ही।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation